Vol III Issue I Feb 2013
Impact Factor : 0.2105
ISSN No : 2230-7850

Monthly Multidisciplinary
Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-chief
H.N.Jagtap

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
Volume 3, Issue.1,Feb. 2013
ISSN:-2230-7850

Available online at www.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

'छिन्नमस्ता' - प्रभा खेतान : स्त्री-संघर्ष की गाथा

प्राजक्ता जोशी

हिंदी विभाग प्रमुख
ए . आर . बुर्ला महिला वरिष्ठ महाविद्यालय़ सोलापूर .

सारांशः

बीसवीं सदी के उत्तरार्ध से जीवन और जगत के विविध क्षेत्रों में स्त्री ने अपनी एक अलग स्वतंत्र ऐसी पहचान बनायी है | युगों से वह अन्याय़ अत्याचारों से पीढ़ित रही है | समय के साथ प्रत्येक युग में नारी की स्थिति परिवर्तित हुई है | आज स्त्री सदियों से जड़ जमाए हुए पितृसत्ताक सामंतीशाही व्यवस्था के विरूद्ध खड़ी है | आज स्त्री स्वयं प्रयत्नरत है | सृजनशीलता के साथ अपने को स्थापित कर रही है | उसमें चेतना जागृत हुई है़ स्वावलंबी बनी है | धीर्रेधीरे वह यह महसूस करने लगी है कि़ इन्सान रूप में उसका भी एक निजी व्यक्तित्व है | स्त्री को सामाजिक बंधनों से मुक्ति दिलाने में शिक्षा़ स्वयंसेवी संस्थाओं़ समाज सुधारकों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है | संविधान द्वारा अधिकार की प्राप्ति हुई है | अपनी अस्मिता़ अस्तित्व के प्रति सतर्क हुई नारी अपना रास्ता स्वयं चुन रही है | आज वह पुरूषों के साथ हर क्षेत्र में कार्यरत है |

प्रस्तावना -

यह सत्य है कि साहित्यिक क्षेत्र पर प्रायः पुरूष लेखकों का एकाधिकार रहा है़ परंतु स्वतंत्रता के पश्चात्कई महिला लेखिकाओं के दस्तक के साथ स्त्री लेखन में सशक्तता आयी है | मन्नू भंडारी़ उषा प्रियवंदा़ कृष्णा सोबती़ नासिरा शर्मा़ मालती जोशी़ अलका सरावगी़ मैत्रेयी पुष्पा़ प्रभा खेतान जैसी अनेक महिला लेखिकाओं ने पुरूष लेखकों को चुनौती दी | नयी विचाराधाराने स्त्री को प्रगती की ओर अग्रेसर किया है | पहले नारी लेखन 'चारदिवारों में बंद' लेखन माना जाता था लेकिन अब वह संपूर्ण नारी जाति के प्रेरणा क़ा स्वतंत्रता का संघर्ष का लेखन बन गया है | नयी समाज व्यवस्था में नारी को मनुष्य के रूप में स्थान प्राप्त हो रहा है |

1975 के पश्चात्साहित्य के क्षेत्र में पाश्चिमात्य संकल्पना 'फेमिनिझम' का प्रभाव दिखाई देता है | जिसके परिणामस्वरूप आगे स्त्री को केंद्र में रखकर स्त्रीवादी साहित्य की निर्मिती होने लगी | सभी भाषाओं के साहित्य में समय-समय पर जो मौलिक विचार व्यक्त होते तहे है उनमें स्त्रीमुक्ति एवं विभिन्न समस्याओं को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया गया | स्त्री विमर्श आज एक गंभीर चिंतन और चिंता का विषय बना हुआ है | कई महिला लेखिकाओं ने कहानियों के सार्थसाथ ताकतवार ऐसे उपन्यासों के माध्यम से नारी मनोविज्ञान के साथ उसकी समस्याएँ द्वंद्व संघर्ष़ स्त्रीजीवन के विविध पहलुओं को परत-दर-परत बडी ताकत के साथ उजागर कर रही है | महिला उपन्यासकारों के सार्थसाथ पुरूष उपन्यासकारों ने भी नारी समस्या एवं नारी के विभिन्न रूपों को अपने उपन्यासों के केंद्र में रखा है |

नारी मुक्ति या नारीस्वातंत्र्य की अग्रणी लेखिकाओं में एक विशेष उल्लेखनीय नाम रहा है प्रभा खेतान का | प्रभा खेतान अपने मर्जी से जीवन जीनेवाली बोल्ड़ कभी किसी की परवाह नहीं करनेवाली़ दुनिया घुमी हुई एक सफल व्यवसायी होने के साथ एक सफल लेखिका भी रही है | अपने लेखन के प्रति समर्पित प्रभाजी के उपन्यासो़ं कविताओ़ं चिंतऩ अनुवादों में स्त्रीविमर्श तो मुलरूप से है ही़ पर उनके अलग से लिखे स्त्रीविषयक निबंध जैसे कि बाजारवाद़ भूमंडलीकरण का स्त्री के जीवन पर पडनेवाला असऱ स्त्रीमुक्ति कामना की कथाएँ भी अतुलनीय है | सिमर्नदबुआ की 'द सैकिंड सैक्स' का हिंदी अनुवाद भी उन्होंने किया है | स्त्रीवाद की वैचारिक को लेखिकाने समझाने के कोशिश की है और लगातार लिखा है | बहुत कम समय में उन्होंने हिंदी पाठकों में अपनी प्रश्नावली उपस्थिति दर्ज की |

प्रभा खेतान ने बदलते हुए जीवर्नसंदर्भ में नारी की बदली हुई मानसिकता के साथ जुडी हुई भारतीय नारी की समस्याओं को केंद्र में रखकर अपने औपन्यासिक संसार का सृजन किया है | सोच और सृजन के साथ गहरी संलग्नता प्रभा खेतान की विशेष पहचान है | प्रभा खेतान का पहला उपन्यास 'छिन्नमस्ता' है जो **1993** में प्रकाशित हुआ | इसके अलावा 'आओ पेपे घर चले़' 'तालाबन्दी़' 'अग्निसम्भवा़' 'पीली ऑंधी' आदि उपन्यास लिखे है |

उपन्यासों में प्रभा खेतान के चिंतन व संवेदना के केंद्र में स्त्री है | प्रभाजी स्वयं मारवाडी परिवार की है | पीर्लीऑंधी और छिन्नमस्ता दोनों उपन्यास का परिवेश मारवाडी समाज है | "छिन्नमस्ता" उपन्यास कलकत्ता में रहनेवाले उच्चवर्गीय मारवाडी़ रिवार की कथा है | यह उपन्यास प्रिया नामक एक ऐसी नारी की कथा है़ जो निरंतर शोषित है | समाज की जर्जर मान्यताओं से भी और पुरूष की ाादिम भूख से भी टूट जाने की हद तक | लेकिन वह टूटती नहीं है बल्कि शोषक शक्तियों के लिए चुनौती बनकर एक नई राह पर चल पड़ती है और यही से आरंभ होती है उसकी बाहरी और आंतरिक यात्राएं | संघर्षो का अटूट सिलसिला ऽ स्वह पुरूष से तथा पुरूष प्रधान समाज से संघर्ष करने अपनी अस्मिता की रक्षा करती है | समाज में अपनी अलग पहचान बनाने में सफल होती है | सुदेश बत्रा के अनुसार "प्रभा खेतान के उपन्यास 'छिन्नमस्ता' की प्रिया उपेक्षा़ अपमाऩ टूटने से इबरकर एक स्वतंत्र अस्तित्व के रूप में सामने आती है |"[1]

प्रिया के संघर्ष को प्रस्तुत करने के लिए लेखिका ने जिन विभिन्न चरित्रों का सहारा लिया है | उनकी भी अपर्नीअपनी कथा है़ संघर्ष है | इन सबके जीवन का प्रिया के सफर पर प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में प्रभाव दिखाई देता है | दाई मॉ़ अमा़ बडी बहनें़ भाबी़ छोटी मॉ़ पिताजी़ भाई़ पति नरेंद्र आदि सभी चरित्र प्रिया के संघर्ष को आगे बढ़ाते है | प्रिया जो उपन्यास में आधुनिक नारी का प्रतिनिधित्व करती है़ शक्ति का रूप है | समाज के अत्याचार से टूटने की अपेक्षा वह संघर्ष कर अपनी जिंदगी बनाती है | प्रिया की कथा किसी भी समाज की स्त्री की हो सकती है | स्वयं प्रभा खेतान का कहना है - 'साधारण मानवीय रूप में मेरी नायिका प्रिया अपनी व्यथा को कहती है़ और हमें कहर्तेकहते अपने एक त्रासद अतीत से उबारती है | समाज के अनुसार उसे मर जाना चाहिए था़ टूट जाना चाहिए था | उसका सर तो पहले ही कट चुका था़ लेकिन फिर भी वह छिन्नमस्ता देवी अपने वक्त स़े परिवेश से और अन्ततः अपने पति से लड़ती हुई अपनी जिन्दगी बनाती है़ "[2]

उपन्यास में अधिकांश नारी पात्र है और अपने दर्द और पीड़ा को अपने अंदर समेटे हुए है | प्रिया की मॉ शोषक और शोषित दोनों रूपों में उभरकर आयी है | दाई मॉ अन्याय को चुपचाप सहन करने वाली और जब असहाय हो जाता तब अपने गॉव चली जाती है़ छोटी मॉ त्याग की मुर्ति़ नीना विद्रोही़ प्रिया 'छिन्नमस्ता' बनकर

अपना मार्ग स्वयं चुनती है | प्रभा खेतान के ही शब्दों में "वस्तुस्थिती तो यह है कि सत्ता के शिखर पर बैठी हुई स्त्री भी उस नैतिकता के दोहरे मापदन्ड को झेलने को बाध्य होती है जो इस शाश्वत पुरूष वर्चस्व एवं स्त्री समर्पण की महिमा मंडन करती रही है | स्त्री पक्ष को स्त्री दृष्टीकोण को सही रूप से स्वीकारने का अब भी हममें साहस नहीं | प्रिया के जीवन में जो कुछ भी घटित हुआ है वह शून्य में नहीं घटा यह घटना किसी एक वर्ग की कहानी नहीं यह हर कहीं घटती है | देश-विदेश हर कहीं | और आज भी स्त्री अपनी इस निहत्थी लड़ाई में लहूलुहान होती रहती है |"[3]

प्रिया परिस्थिती से जूझती संघर्ष करती है पर टूटती हारती नहीं है अपने जीवन के अकेलेपन को ही अपना साथी बनाकर आगे बढ़ती है | प्रिया कहती है' 'मेरा साथ मेरा अकेलापन है वह अकेलापन मुझे जीवन का अर्थ समझा रहा है | कैसे मैने अपर्नेआपको बचाया है अपने मूल्यों को जीवन में सँजोया है | टूटी हूँ बार्रबार टूटी हूँ . . . . . पर कहीं तो चोट के निशान नहीं . . . . . दुनिया के पैरों तले रौंदी गई पर मैं मिट्टी के लोंदे में परिवर्तित नहीं हो पाई हूँ | अडतालीस की इस उम्र में एक पूरी की पूरी साबुत औरत हूँ जो जिंदगी को झेल नहीं रही बल्कि हँसते जी रही है जिसे अपनी उपलब्धियों पर नाज है | दोस्ती का हाथ बढ़ाकर जिसकी गर्म हथेलियाँ हर किसी को अपने करीब खींच लेती है |[4] अरविंद जैन के अनुसार-'छिन्नमस्ता कुलीन भद्रलोक में अपनी अलग पहचान जमीन और व्यवस्ता बनाने का खतरा बतार्तीदिखाती शायद पहली आत्मकथा ह्यआत्मविश्लेषण) है जिसमें बहुत कुछ ऐसा है जो कहा नहीं गया था अबतक |'

इस प्रकार निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते है बचपन से ही स्त्री जीवन की यंत्रणाओं को देखते और स्वयं भुगतते हुए ही वह स्त्री की स्वायत्तता स्त्रीआस्मिता स्त्रीआत्मनिर्भरता और स्त्रीगरिमा के पक्ष में इतना सहज़ विश्र्वसनीय और गंभीर चिंतन हमें दे पाई है | लेखिकाने प्रिया को 'छिन्नमस्ता' के रूप में प्रस्तुत किया है | यह प्रतीक उपन्यास के उद्देश्य को स्पष्ट करता है साथ ही नारी के आर्थिक स्वातंज्य़ परम्परा एवं मूल्यों के प्रति विद्रोह एवं आधुनिक दाम्पत्य संबंधों की सही पहचान द्वारा नारी को नयी दिशा प्रदान करने का संकेत है |

संदर्भ :-

1 . साहित्य में नारी मुक्ति-चेतना-मधुमती सुदेश बत्रा
2 . महिला उपन्यासकार - डॉ . मधु सन्धु पृ . **50**
3 . वह पृ . **52**
4 . छिन्नमस्ता प्रभा खेतान पृ . **24-25**

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net